ISSN No. 2394-9996

मृणाल पांडे के कथा साहित्य में नारी विमर्श : `रास्ते पर भटकते हुए` उपन्यास के विशेष संदर्भ में`

प्रा. मुजावर एस.टी
प्रमिलादेवी पाटील कला विज्ञान
महाविद्यालय, नेकनूर ता.जि. बीड.

आधुनिक हिंदी साहित्य में मृणाल पांडे सर्वतोन्मुखी प्रतिभा संपन्न प्रतिष्ठित कहानीकार, उपन्यासकार के साथ-साथ नाटककार के रूप में सामने आई हैं।

मृणाल पांडे ने पत्रकारिता और साहित्य दोनों ही क्षेत्रों में अपने सामायिक और प्रासंगिक लेखन द्वारा अपने लेखकिय जिम्मेदारी का कुशलतापुर्वक निर्वहन किया है। समाज में स्त्री का दुय्यम दर्जा, उसके बंधन उसकी पीड़ा को उन्होंने अनुभव ही नही किया बल्कि अपनी रचनाओं का विषय भी बनाया है इसमें संदेह नहीं है कि उनमें वास्तविक और व्यवहारिक अनुभवों के कारण ही मृणाल पांडे का स्त्री-विमर्श अद्वितिय बन गया है। उनकी रचनाओं में स्त्री की चर्चा उसकी समस्याएँ और आवश्यकता के लिए ही नही होती है बल्कि स्त्री पीड़ा का प्रकटीकरण के साथ समाधान का मार्ग भी खोजा गया है।[1]

मृणाल पांडे के कथा साहित्य में महत्वपूर्ण उपलब्धि उनकी रचना उपन्यास `रास्तों पर भटकते हुए` में पत्रकारिता जगत् में राजनीति के प्रभाव को दिखाया है, इस उपन्यास की नायिका मंजरी बहुत ही स्वावलंबी नारी है। पति से अलग होकर अकेले जीवन यापन करने के बावजूद वह किसी प्रकार का समझोता करने को तैयार नहीं है। वह नौकरी छोड़ देती है और अपने ससुराल पक्ष से प्राप्त फ्लैट की किराये पर चढ़ा कर एक निम्न वर्गीय लोगों की रहने की जगह में रहती है। निम्न वर्गीय बस्ती में रहना मंजरी की स्वेच्छा है न कि आर्थिक विवशता। एक तरह से मंजरी स्वेच्छा से स्वयं को अपने समाज, परिवार और सहकर्मियों से अलग होकर नितांत अकेला जीवन जी रही है।

`रास्तो` पर भटकते हुए` उपन्यास का ही एक अन्य चरित्र पार्वती का है जो आर्थिक सामाजिक मजबूरी के कारण वेश्या के रूप में जीवन व्यतीत करने पर मजबूर है। पार्वती का इस प्रकार का जीवन जीने से उसके बेटे बंटी को अनेक कष्ट झेलने पड़ते है वह सामान्य बच्चों के समान प्यार दुलार नहीं पाता है और

यही नहीं पार्वती को बहकाकर एक दिन डॉ. सेन बंटी को ले जाकर उसकी किडनी निकलवा लेते है। पार्वती के घर के करीब ही मंजरी का निवास है, इस कारण बंटी की मंजरी से दोस्ती हो जाती है।

मंजरी को स्वयं का छिपाना, एक तरह से जीवनसे उदासीन होकर बिना लक्ष्य के जीना सम्भव हो रहा था। तभी बंटी मंजरी के जीवन में प्रवेश कर जाता है और मंजरी को इस बात का पता भी नहीं चलता उसका आना मंजरी को अच्छा लगता है। पर एक दिन उसी बंटी की मौत मंजरी के पत्रकारिता के मन में छटपछाहट पैदा कर देती है और बंटी से मंजरी का प्रेम उसके उन भयानक रास्तों पर जाने को मजबूर कर देता है जहाँ पर जाने का उसने कभी सोचा न था, मंजरी बंटी की मौत का सच जानने के लिए और उसकी मौत के जिम्मेंदार लोगों को उसकी सजा दिलवाने के लिए कुछ भी करने को तत्पर हो जाती है। वह प्रत्येक खतरे को झेलने को तैयार होती है, उन रास्तों पर भटकती है जहाँ पर जाना भी अपमान समझती थी। मंजरी अपने भाई से धन लेकर तहकीकात में व्यय करती है साथ ही अपने सारे सम्पर्कों का प्रयोग कर डालती है और आतंक के चेहरे का डटकर मुकाबला करती है।

इस उपन्यास में न्याय की व्यवस्था में भ्रष्टाचार किन-किन रूपों में उभर सकता है, प्रदर्शित होता है। भ्रष्टाचार के अन्तर्गत न्याय प्राप्त करना कितना कठिन है यह मंजरी को पता चल जाता है लेकिन वह हिम्मत नहीं हारती। और बंटी को न्याय दिलवाने के लिए लगी रहती है। बंटी को न्याय दिलवाने की प्रक्रिया में उसके निजी जीवन के कई भेद भी इन अंधेरो से जुड़े मिलते है।

`रास्ते पर भटकते हुए` उपन्यास में मृणाल पांडे ने माँ के लगभग सभी रूपों का वर्णन किया है। प्रत्येक परिस्थिती में माँ के रूप में एक स्त्री वास्तव में अद्वितीय पायी गई है ऐसी ममतामयी, वात्सलमयी माँ का रूप एक पुरूष अपनाने में असमर्थ है `रास्तों पर भटकते हुए` उपन्यास में अपनी छोटी उम्र के बच्चे की मौत के कारण दुखी माँ का चित्रण हुआ है अपने बच्चे की मौत से पार्वती पथरा सी जाती है उसे किसी भी चीज का होश नहीं रहता। इस हादसे ने पार्वती को पूरी तरह हिला दिया है। उसकी ऐसी हालत देखकर एक बूढ़ी औरत कहती है, ``यम की देहरी पर खड़ी है पार्वती,`एक मूक` अन्धी माँ किससे मागेंगी एक बच्चे के पाप पुण्य का हिसाब?``[2]

मृणाल पांडे ने नारी के माँ रूप का चित्रण बड़ी मार्मिकता के साथ किया है। इनकी रचनाओं में माँ ममता की मूर्ति है। `रास्तों पर भटकते हुए` की मंजरी की माँ एक स्वाभिमानी ममतामयी माँ का पूर्ण चित्रांकन करती है। जिसका इकलौता बेटा धनवान बनने पर अलग होकर रहता है वह अकेले रहती है फिर भी अपने

पड़ोसियों व जान पहचानवालों से उसकी कोई बुराई नहीं करती। मंजरी सोचती है, ``अपने ही बच्चों को बदनाम करने की मूर्खता भाई के प्यार में निस दिन पगलाई फिरती चिरमूर्खा चिरचिप्रलब्धा हमारी माँ ने कभी नहीं की थी।``[3] मंजरी की माँ का यह विशाल ममतामयी ह्रदय था जहाँ वह अपने बेटे से कोई शिकयत नहीं रखती।

वह मंजरी को अपने भविष्य को सुधारने के लिए प्रयास करने को कहती है जिससे उसकी बेटी का भावनात्मक व आर्थिक आधार बन सके, लेकिन मंजरी को माँ की दखलानंदाजी पसंद नहीं आती वह माँ को बूरा-भला कहती है उस पर उसकी वात्सल्यमयी माँ उसे न डांटकर स्वंय को ही दोष देती हुई कहती है, ``मेरी कोख में खोट होगी जो अपने कोखजायों को भी मेरी बातें नहीं सुहाती अब।``[4] अपने बच्चों की नादानी का जिम्मेंदार वह स्वयं को ठहराती है यह उसकी उदार ममता को दर्शाता है।

`रास्तों पर भटकते हुए` उपन्यास की पार्वती हो या मंजरी या उसकी माँ सभी अकेले अपने पूर्ण स्वाभिमान के साथ रह रही हैं। उन्हें पुरूष का साथ न मिलने पर वह कमजोर नहीं हुई है। उनके ममतामयी रूप में भी कोई अन्तर नहीं आया है, हाँ यह अवश्य है कि कभी ममता उन्हें कुछ परिस्थितियों में अपनी राह बदलने को मजबूर कर देती है। यही कारण है कि पार्वती को दुखी होकर मरना पड़ा और मंजरी को उन रास्तों पर जाना पड़ा जहाँ उसने पलट कर देखने का भी नहीं सोचा था। वह कहती है, ``वह तो बंटी की मौत ने अचानक सब तार-तार कर डाला है। वे तमाम चट्टानी गराहयाँ, उनके बीच छुपे वे दरके हुए पठार और चटखे हुए चकमक पत्थर सभी को बेपर्द कर मेरे सामने उस बच्चे ने बता दिया है कि मैं न मुँह चुरा सकती हूँ, न भाग सकती हूँ।``[5] बंटी के प्रति मंजरी का प्रेम उसे जीवन का लक्ष्य दे देता है।

मृणाल पांडे ने स्त्री के शक्तिरूप को अपने इस उपन्यास में व्याख्यायित किया है उनके उपन्यासों में नारी-विमर्श का वास्तविक लेखन `रास्ते पर भटकते हुए` इस उपन्यास में सच्ची धारणाओं का वर्णन है वे समाज में स्त्री चेतना को वास्तविक धरातल पर विश्लेषित कर रही है।

संदर्भ सूची -

1) समकालीन महिला उपन्यासकारों में नारी की विमर्श - डॉ. मुक्ता त्यागी
2) रास्तों पर भटकते हुए - मृणाल पांडे, पृ. 16
3) रास्तों पर भटकते हुए - मृणाल पांडे, पृ. 49
4) रास्तों पर भटकते हुए - मृणाल पांडे, पृ. 51
5) रास्तों पर भटकते हुए - मृणाल पांडे, पृ. 14